www. kalyancollege.org

ISSN-0972-9909

छत्तीसगढ़-विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता,
वाणिज्य एवं विज्ञान की
त्रैमासिक शोध-पत्रिका

जुलाई-अगस्त-सितंबर, 2018

ISSN-0972-9909 CHHATTISGARH VIVEK www.kalyancollege.com

UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL NO. 63540

IMPACT FACTOR GIF 2.5095

छत्तीसगढ़ विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता, वाणिज्य एवं विज्ञान की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक-60, वर्ष-18, जुलाई-अगस्त-सितंबर, 2018

•

प्रमुख संरक्षक

आर.पी. मिश्रा

अध्यक्ष, शासी निकाय

•

संरक्षक

प्रो. ए. आर. वर्मा

प्राचार्य

•

संपादक

डॉ. सुधीर शर्मा

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

कल्याण अध्ययन-विश्लेषण एवं अनुसंधान केंद्र

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर (छत्तीसगढ़)

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Sagaipali) Mahasamund (C.G

UGC Sr. No. 63540 ISSN-0972-9909

छत्तीसगढ़ विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता, वाणिज्य एवं विज्ञान की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक-60, वर्ष -18, जुलाई-अगस्त-सितंबर, 2018

अनुक्रम

1.	नवा अंजोर कार्यक्रम प्रगति पथ पर नई दिशा	- श्रीमती अर्चना वर्मा	05
2.	नव गीतों का साहित्य संरचनागत पक्ष-गठन और बनावट	- डॉ. कृष्ण कुमार ठाकुर	09
3.	'गुजरात पाकिस्तान' से 'गुजरात हिंदुस्तान' उपन्यास में विभाजन की त्रासदी	- मासूम वर्मा	13
4.	पंडित बिरजू महाराज का फिल्मों में नृत्य निर्देशन	- श्रीमती छाया जैन	15
5.	पं. सुंदरलालशर्मणः छत्तीसगढ़ी पद्यकाव्येषु – संस्कृतछन्दसां प्रभावः	– रूपेन्द्र कुमार तिवारी	18
6.	ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में निर्मित ग्वालियर का विक्टोरिया कॉलेज भवन : एक अध्ययन	- डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ	25
7.	अमृतलाल नागर का बाल साहित्य : सृजन और संदर्भ	- डॉ. प्रकाश चंद्र सतपथी	31
8.	'Cry, The Peacock: The Innen world of Maya" Them of alienation in the novel 'Cry, the Peacock'	- Dr. Suchita Srivastav	37
9.	धारणीय, समावेषी विकासः अवधारणा एवं उपाय	- डॉ. लखन चौधरी	41
10.	प्रतिरोध और विद्रोह का कवि मुक्तिबोध	- डॉ. रमणी चंद्राकर	47
11.	छायावाद के प्रवर्तक पं. मुकुटधर पाण्डेय	- डॉ. फ़िरोज़ा जाफ़र अली	52
12.	ग्रामीण बालिकाओं का सामाजिक विकास में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन (गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में)	- प्यारे लाल अहिरवार/डॉ. अब्दुल सत्तार	55

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
...galior), Mahasamund (C.G

ISSN-0972-9909

UGC Sr. No. 63540

अमृतलाल नागर का बाल साहित्य : सृजन और संदर्भ

डॉ. प्रकाश चंद्र सतपथी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
रामचण्डी महाविद्यालय, सरायपाली

अमृतलाल नागर 1916-1990 के प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपने ऐतिहासिक, सामाजिक दोनों ही प्रकार के उपन्यास व कहानियाँ लिखी हैं। आपने बाल साहित्य भी रचा है। कई प्रदेशों में बालकों के शैक्षिक पाठ्यक्रम में भी आपकी रचनाओं को स्थान प्राप्त हुआ है। इसके बावजूद भी तुलनात्मक रूप में देखा जाए तो आपको अधिक ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में ही प्राप्त हुई है। संभवत: कुछ हद तक उनके उपन्यासों की भव्यता व लोकप्रियता भी इसका एक कारण हो। नागर जी हिन्दी के अत्यन्त प्रतिष्ठित और सर्वाधिक पढ़े जाने वाले रचनाकारों में से एक हैं। पर मेरा मानना है कि आपकी कहानियों व बाल साहित्यों को वह स्थान प्राप्त नहीं हो पाया जिसके कि आप हकदार रहे हैं।

आपने मात्र 15-16 वर्ष की अल्पायु में ही लेखन प्रारम्भ कर दिया था। लखनवी मुशायरों व काव्य गोष्ठियों के प्रभाव में आपकी रचनाधर्मिता तुकबन्दियों से प्रारम्भ हुई थी। आगे चलकर आप स्वयं भी उन रचनाओं को काव्यात्मक तुकबन्दी कह हँस पड़ते थे। सहमत नहीं हो पाते थे, उन्हें स्वयं भी अपनी वह शैली रास न आती थी। अत: लम्बे समय तक आप उसे यों ही बरकरार न रख पाए थे, व आपने अपनी लेखनी को पद्य से गद्य की तरफ मोड़ लिया था। प्रारम्भिक दौर में आपने जो रचनाएँ कविताएँ या तुकबन्दियाँ लिखी वे मेघराज इन्द्र के नाम से लिखीं। फिर अपनी लेखनधारा/विधा में आगे बढ़कर परिवर्तन करते हुए ''तस्लीम लखनवी'' नाम से व्यंग्यपूर्ण स्केच व निबंध लिखे। आपने निरंतर टालस्टॉय चैखोव, प्रेमचन्द इत्यादि को पढ़ा। अपनी शैली में सुधारात्मक परिवर्तन किए। अपने जीवन व लेखन में परिपक्वता प्राप्त कर आपने अपने मूल नाम अमृतलाल नागर नाम से कहानियाँ लिखना प्रारम्भ किया और साहित्यिक ऊँचाइयों को प्राप्त किया। आपकी भाषा सहज, सरल व दृश्य के अनुकूल रहीं। मुहावरों, लोकोक्तियों, विदेशी व देशज शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया। भावात्मक वर्णनात्मक, चित्रात्मक, शैली का प्रयोग आपकी रचनाओं को सार्थकता प्रदान करने वाला रहा फिर आपकी लेखनी निर्बाध गति से आगे बढ़ने लगी।

आपका व्यक्तित्व साहित्य सागर के अमृत सा विशिष्ट कहा जा सकता है। क्योंकि आपकी लेखनी में जीवन के विभिन्न पृथक-पृथक रूपों रूपी' नदियाँ निर्बाध गति से समाहित हैं। जीवन के विचित्र व पृथक-पृथक अनुभूत रंग अपनी विशिष्ट कार्यशील आभा के साथ आपके लेखन में विशिष्टता से समग्रता को प्राप्त हुए है। कहीं व्यंगात्मक तीक्ष्ण नजर आपकी कलम को आकार प्रदान करती है तो कहीं निश्छल मासूमियत आपकी कलम का शृंगार बनती है। आपके साहित्य में कहीं सूर्योदय सी सिंदूरी आभा प्रदीप्त होती दिखाई पड़ती है, तो कहीं सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण सी आभासित कालिमा के दर्शन होते हैं। कभी-कभी तो लगता है कि तूलिका यो ही निरूद्देश्य चल पड़ी, मगर अंतिम लक्ष्य तक पहुँचते-पहुँचते जीवन के किसी विशिष्ट क्षेत्र को प्रकाशमान कर ही जाती प्रतीत होती है। आपका सृजन सदैव सहजता से दैनिक जीवन की घटनाओं, प्रसंगों से प्रभावित होता हुआ प्रारम्भ हो जाता था। फिर यह सृजन यात्रा उस संबंधित घटनाक्रम/व्यक्ति विशेष के जीवन से जुड़े, सामाजिक रूप से उलझे/सुलझे पड़ावों को पार करती हुई उस दृश्य को गरिमामय रूप में रेखांकित कर ही जाती थी। अंत में एक अद्‌भुत रचना समाज के मानस पटल पर अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त कर ही लेती है। यह आपकी लेखनी व विषय के प्रति समर्पण का भाव ही था, जो उसे विशिष्ट आभा प्रदान करता था।

आपके साहित्य जीवन की सृजन यात्रा का प्रारम्भ यों तो लखनवी अंदाज की तुकबन्दियों को ही कहा जा सकता है। मगर उनसे आप संतुष्ट नहीं थे। अत: आपने अपनी दो कहानियों प्रायश्चित व अपशकुन को यह श्रेय दिया है। ये कहानियाँ आपने आसपास की सामाजिक घटनाओं से प्रेरित होकर लिखी थी। वैसे तो अमूमन यह ही माना जाता है कि

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
...gaijor), Mahasamund (C.G.

UGC Sr. No. 63540
ISSN-0972-9909

लेखनी की जननी संवेदनशीलता ही होती है। सामाजिक या अन्य किसी किस्म की संवेदनाएँ हमारे मानस पटल को उद्वेलित कर जाएँ और जब उन्हें कागज कलम के माध्यम से पूर्ण शिद्दत के साथ उकेर दिया जाए तो विशिष्ट सृजन आकार प्राप्त कर ही जाता है। ऐसा ही कुछ आपके साथ हुआ। उस दौर में आपका एक मित्र अपने घर से भाग गया था। उस घटना ने आपको भीतर तक झंझोड़ कर रख दिया। तब आपने उससे जुड़े प्रत्येक पहलू पर चिंतन, मनन किया, परिणामस्वरूप अपशकुन कहानी का जन्म हुआ। मात्र 16-17 वर्ष की उम्र में लिखी कहानी उस वक्त ही दिल्ली से निकलने वाली पत्रिका रंगभूमि में छप भी गई। जिससे आपके जीवन में आत्म विश्वास का संचार हुआ व साहित्यिक स्वरूप में विशिष्ट दिशा प्राप्त हुई।

प्रायश्चित भी आपने तभी लिखी थी इसमें भी वही किशोरवय बालक किस तरह अन्जाने ही कलुषित, भ्रष्ट मानसिकता वाले प्रौढ़ के चक्कर में फँस अपनी दुनिया उजाड़ लेते हैं। उन्हें पता ही नहीं चलता। इसे बड़े ही मार्मिक ढंग से आपने अपनी कृति में प्रस्तुत किया है। जिसे किशोरवय बालक पढ़कर स्वयं ही अपने आप को सुरक्षित रखने के उपाय को खोज सकते हैं। प्रायश्चित और अपशकुन आपने साथ ही लिखी थी। दोनों किशोरवय बालकों की मनोदशा को स्पष्टतः रेखांकित करने में समर्थ रही हैं।

आपने उस दौर में मोपासां की कहानियाँ खूब पढ़ी थीं, फ्लाबेयर, बाल्जाक, अलेकजेण्डर, टॉल्सटॉय, चैखोव, चंडीप्रसाद मिश्र 'हृदयेश' व प्रसाद जी को भी बहुत पढ़ा। जब किसी लेखक की लेखनी का नशा सा चढ़ जाता तो उसी शैली में आप अपना भी कुछ लिख जाते थे। पर उनका बालमन कुछ विशिष्ट लेखन हेतु भी उन्हें आत्म प्रेरित करता था। तब आपने अपना हाथ साफ करने व अपनी लेखनी को तीव्र धार प्रदान करने के उद्देश्य से फ्लाबेयर, चेखोव, टॉलस्टॉय जैसे लेखकों को पढ़ने के पश्चात् उनकी लेखनी का अनुवाद भी निरंतर किया, जिससे कि उनमें घटनाक्रमों की सहजता, विश्लेषण, संश्लेषण जैसी सूझबूझ का विकास हुआ और आपकी लेखनी को बल प्राप्त हुआ।

बाल साहित्य सृजन हेतु बालमन की विशिष्ट अनुभूतियाँ लेखक के भीतर होना अनिवार्य शर्त है। नागर ने जब लेखन प्रारम्भ ही बालपन में कर दिया था, तो स्वाभाविक रूप में ही बालपन व बालमन की अनुभूतियाँ आपके भीतर विद्यमान रहीं। जिन्होंने आपके द्वारा रचित बाल साहित्य को वही अपेक्षित अनुकूलता, सहजता, सरसता, सरलता प्रदान की। आप बालमन के कुशल चितेरे रहे हैं।

आपका बाल साहित्य बड़ा ही अनूठा सा है। आपकी एक प्रसिद्ध कहानी है ''नटखट चाची'' जिसमें बालक ठीक से सो भी न पाता है फिर उन्होंने ''निंदिया आ जा'' शीर्षक से दूसरी कहानी रच डाली। आपकी बाल साहित्य पर एक रचना है ''बजरंगी नौरंगी'' दूसरी रचना बजरंगी पहलवान फिर बाल महाभारत, इतिहास स्मगलरों के फँदे में आप देखिए उक्त रचनाओं में अनूठी विविधता भी है और विशिष्ट साम्य भी स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। ऐसा लगता है कि मानो किसी रचना को लिखते-लिखते ही उनके भीतर दूसरी-तीसरी रचना का मसौदा तैयार हो जाता है। 1982 में आपने लिखी अक्ल बड़ी या भैंस। इसकी नाटकीयता से दूसरी रचना तैयार हो गई आओ बच्चों नाटक लिखें फिर 1990 में सतखंडी हवेली का मालिक तैयार की। इसमें थोड़ी कठोरता, क्रूरता के दर्शन हुए तो तुरंत कोमलता लिए हुए फूलों की घाटी, बाल दिवस की रेल नामक रचनाएँ आ गई। 1998 में सात भाई चंपा रची तो फिर इकलौता लाल, साझा, सोमू का जन्मदिन, शांति निकेतन के संत का बचपन और 2001 आते-आते त्रिलोक विजय नाम से रचना आ गई।

आपका लेखन आसपास की घटनाओं से प्रेरति रहता था व साथ ही लेखन के दौरान लिखते-लिखते अन्य काल्पनिक घटनाएँ भी आपके भीतर जन्म ले लेती थीं, जिन्हें दूसरी-तीसरी रचनाओं में आकार प्राप्त हो जाता था। प्रत्येक रचना अनूठी व विशिष्ट बन पड़ती थी। शायद यही कारण था कि आपका व्यक्तित्व एक श्रेष्ठ गल्प शिल्पी के रूप में सम्मान हासिल कर सका।

आपकी एक बहुचर्चित व बड़ी पसंद की जाने वाली कहानी है, ''नटखट चाची'' इसे अक्सर ही बालक हल्का-फुल्का हास्य के रूप में पढ़ना प्रारम्भ करते हैं, क्योंकि शीर्षक से यही प्रकट होता है। कहानी पढ़ते-पढ़ते महसूस होता है कि यह तो नागर जी की लेखनी के विशिष्ट शिल्पकारी का कमाल है कि आपने गंभीर समस्यात्मक पहलू को भी हास्यात्मक रूप में परोसा है कि पाठक समझ ही नहीं पाता कि अभी अचानक उसने गंभीर समस्या रूपी झलकी को देखा है। यही ताकत है आपकी लेखनी की।

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
...jiod Mahasamund (C.G.

आपकी रचनाओं को आपका लेखन शिल्प बड़ा ही सहज, सरस व रोचक बनाए रखता है। आप घटनाओं के छोटे-छोटे टुकड़ों को इस विशिष्ट तारतम्य में पिरोते हैं कि पाठक जरा सा भी अपनी दृष्टि से दृश्यों को ओझल नहीं होने देता। आप स्वयं बानगी देखिए।...........

जरा कोशिश करो, तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि बीस वर्ष पहले मेरी वही उम्र थी, जो आज तुम्हारी है। पिताजी मरते समय मुझे बजाये किसी अनाथालय में दान करने के, चाचा को सौंप गए थे और चाचा साहब ने मुझे चाची के हाथों सौंप दिया। मेरे चाचा के घर आने के बाद ही चाची ने नौकर को झाडू मारकर निकाल दिया और मुझे तीन काम सौंपे- सवेरे उठकर मण्डी से तरकारी लाना, इसके बाद उनके गोदी वाले बच्चे को खिलाना और फिर मार खाना। ये तीनों काम मैं रोज बिना किसी हीले-हवाले के कर लिया करता था। इसी से मेरी चाची अक्सर ही प्रसन्न होकर मुझे बड़े प्रेम से खाने के लिए गालियाँ दिया करती थीं।........

चाची के डील-डौल को देखते हुए चचा उनके मुकाबले डेढ़ पसली के ठहरते थे। जब जरा तबियत सावधान हुई, तब राज खुला। बात यह थी कि मुनुआ के रोने की आवाज जब सोते में चचा के कान में पड़ी तो वे नीचे उसे चुप कराने की गरज से उतरे। मगर नीचे आकर जो यह माजरा देखा तो चाची को झिंझोड़कर पूछा। चाची उस समय बेहद डरी हुई थी। आँखें बंद थी, और उनके दिमाग में सिर्फ चोर की ही धुन समा रही थी। वे चचा को चोर समझ बैठी उसके बाद तो फिर आव देखा न ताव, धमक कर चचा के ऊपर चढ़ बैठीं। .... और मेरी कैफियत यह है कि जिसे मैं चोर समझ बैठा था, वह असल में छत के ऊपर बना छोटा सा गुम्बद था, जिस पर टाट पड़ा सूख रहा था।

यह आपकी शिल्पकारी का नमूना है जो आपकी लेखनी में जान फूंकता है। आपकी एक रचना है, ''किस्सा बी सियासत भठियारिन और एडिटर बुल्लेशाह का''।

इसमें आपने लखनवी अंदाज में गद्य को परोसते वक्त नज़ाकत, नफासत बनाए रखते हुए शायराना तबियत के दीदार करवाए हैं। बानगी देखिए.......

जाड़े की रात। नया जंगल। एक डाल पर तोता, एक डाल पर मैना। हवा जो सन सन चली तो दोनों काँप उठे। मैना अपने परों को समेटकर बोली कि अय तोते, तू भी परदेसी, मैं भी दूसरे देश की। न यहाँ तेरा आशियाना और न मेरा बसेरा। किस्मत ने हमारा घर-बार छुड़ाया। लेकिन मुसीबत ने हमें साथी बनाया इसलिए अय तोते, अब तू ही कोई जतन कर कि जिससे रात कटे कोई किस्सा छेड़ कि मन दूसरा हो.... भनक एडीटर बुल्लेशाह को पड़ी। अक्ल की फकीरी पर शक्ल की अमीरी अपनाई खुदा के नूर पर मेहंदी रचाई, जुल्फों में तेल डाला और फिर जो सुरमीली नजरों को तिरछा घुमा के फैंक दिया जो जहान में आग लग गई।.........

ऐसे सनक के गले में बाँहें डालकर मैं जो एक आह करूँ तो गली कूचों में शोर मच जाए, जो चाहे करूँ वह पूरी हो, जो गुनाह करूँ तो वो छिप जाए, मेरी वाहवाही हो, मेरी धूम मच जाए। इसलिए ए निगोड़े मुए भटियारे, मैं तुझे छोड़ चली, मुंह मोड़ चली, जाके घर घर में आग लगाऊँगी मैं। तेरे खल्क को खाक बनाऊँगी मैं।.....

यहाँ हमने अमृतलाल जी के दार्शनिक अंदाज को बड़ी ही सरसता व मासूमियत व स्पष्टता के साथ परोसते देखा।

आप सभी जानते हैं भारतीय संस्कृति में महाभारत को एक विशेष स्थान प्राप्त है। हमारे धर्म-चिंतन का सर्वोपरि ग्रन्थ ''श्रीमद्भागवद्गीता'' इसी का अंग है। ऐसे अति विशिष्ट धर्म ग्रंथ पर कलम उठाने का साहस करना किसी बिरले व्यक्तित्व को ही उजागर करता है। यह दुःसाहस श्री अमृतलाल नगर ने किया है। जो कि आपको अति विशिष्ट की श्रेणी में खड़ा करता है। आपने महाभारत की सम्पूर्ण कथा को अपनी तूलिका द्वारा बड़े ही सरल व सुग्राही शब्दों तथा प्रवाहपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया है। आदि से अंत तक रोचकता, सरसता, भावप्रवणता को बनाए रखने में सफलता हासिल की है। धर्म दर्शन संस्कृति के इस महाग्रंथ में वर्णित तात्विकता को भी ज्यों का त्यों बनाए रखा है।

यह आपकी सृजनधर्मिता की विशालता का परिचायक है। महाभारत जैसे विश्वकोष की भव्यता को छूने मात्र का प्रयत्न करना भी आपको आपकी लेखनी को आम से खास बनाता है क्योंकि महाभारत एक लाख श्लोकों का ग्रंथ है। जिसे छापने में गीता प्रेस गोरखपुर को पूरा एक वर्ष लगा था। उसे पढ़ना, समझना, अंगीकार कर संक्षिप्तीकरण करना वास्तव में अमृतलाल नागर को अमृतमयी प्रेषित करता है। आपने सम्पूर्ण महाभारत का सार सरल शब्दों में साठ छोटी-छोटी कथाओं में मात्र दो सौ बीस पृष्ठों में समेटा है। जिसे हिन्दी भाषी कोई भी बालक बड़ी सहजता से पढ़ व समझ सकता है। आपने महाकाव्य को सहज व

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Bagaliar), Mahasamund (C.G.

सुग्राही बनाया है, जिससे बालकों में भी ग्रंथ के प्रति जिज्ञासा को शांत करने का अवसर प्राप्त हुआ है। आपकी लेखन धर्मिता को सादर नमन। आपकी इस सृजन यात्रा में कथाओं को शीर्षकों की इस दृश्यावली को देखिए- सत्यवती के बेटे, पाण्डु का राज्याभिषेक, शिक्षा का प्रबन्ध, द्रुपद से युद्ध, विदुर की चतुराई, द्रोपदी स्वयंवर, राजधानी का चुनाव, खजाने की खोज, यज्ञ का घोड़ा, सिन्धु देश में बाप-बेटे की लड़ाई, अनेकता में एकता, यादवों का अंत।

हमने पाया कि यहाँ कितनी सहजता, कितना सलिल प्रवाह है, जो पाठक को बीच में रुकने ही न दें। इस ग्रन्थ लेखन पर कलम रुकने के पश्चात आपका ध्यान अपने मित्र महेश कौल के माध्यम से रामचरित मानस पर गया। इस पर चिंतन मनन पश्चात् आप मान्यताओं, लोकोक्तियों, भ्रांतियों, किवदंतियों पर आकर उलझ गए। आपने पाया कि इस महान ग्रन्थ के लेखक तुलसीदास का व्यक्तित्व कितना धीर गंभीर व अनेकानेक विशिष्टताओं से भरा होगा कि उन्होंने इस अति विशिष्ट विभिन्नताओं से युक्त विशाल धर्मग्रन्थ की रचना कर डाली। इस विचार के पश्चात् आपका सम्पूर्ण ध्यान एक सहज मानव तुलसीदास पर केन्द्रित हो गया। हालांकि तुलसीदास जी भी लोकोक्तियों किवदंतियों में ही कैद थे, उनके बारे में प्राप्त जानकारी भ्रम-भ्रांतियों, मत-मतान्तरों इत्यादि में ही गुंथी हुई थी। उनके बारे में कुछ भी स्पष्ट न था। आपका यह विचार भी सागर से मोती चुन लाने के समान ही था। किन्तु तुलसीदास जी के व्यक्तित्व की प्रभावशीलता इतनी थी कि अमृतलाल नागर अपनी तूलिका उठाए चल दिए विशाल समुन्दर में तुलसीदास रूपी विशिष्ट अनमोल मोती का चरित्र खोजने।

यह अमृतलाल जी की तूलिका का ही कमाल था कि कुछ ही समय में विलक्षण रूप से प्रेरक, ज्ञानवर्धक, रुचिकर एवं पठनीय उपन्यास, ''मानस का हंस'' की रचना कर डाली। गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर आधारित यह उपन्यास हिन्दी उपन्यासों में क्लासिक का सम्मान पा चुका है और हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि माना जाता है। नागर जी ने जग की खान छान गहन चिन्तन अध्ययन, मनन व दृढ़ प्रतिज्ञ रह ही इसे अपने लखनवी अंदाज में तूलिकाबद्ध किया है। वैश्वीकरण के इस तकनीकी युग में हमारे बालक धार्मिक ग्रन्थों से दूर होते जा रहे हैं, ऐसे विकट समय में यदि उन्हें नागर द्वारा रचित साहित्य पढ़ने का अवसर मिले तो वे सहजता से इन धर्मग्रन्थों से जुड़ जाएंगे। जहाँ उन्हें सामाजिक जीवन निर्वाह की सहज दिशा सूचक प्रेरणा प्राप्त होती है, क्योंकि आपके कलमबद्ध किए हुए वृहद उपन्यासों में पठनीयता रोचकता अप्रतिम रूप में दृष्टिगोचर होती है।

मानस का हंस की चंद पक्ति-

वस्तु जगत के धरातल पर अभी जिज्ञासाएँ शांत नहीं हुई, गुरुजी।

बेनीमाधव, तुम मेरा जीवन चरित्र, जिस उद्देश से लिख रहे हो वह परिपूरित होकर भी न होगा। बेनी माधव हड़बड़ाकर आगे झुके और अपने गुरु जी के सामने भूमि पर मत्था टेक कर कहा ऐसा श्राप न दें गुरु जी, मेरे यह लोक और परलोक दोनों ही बिगड़ जाएँगे। बाबा हँसे, कहा तुम्हारी श्रद्धा सात्विक होती तो तुम्हें श्राप भय न दिखाई देता। श्रद्धा के सात्विक न होने के कारण तुम्हारे द्वारा लिखा हुआ मेरा जीवन चरित्र व मृत देह के समान ही काल की चिता पर भस्म हो जाएगा। यह यथार्थ है।

उक्त उपन्यास के प्रतिष्ठित हाने के पश्चात् आपसे सूर चरित लेखन की अपेक्षाएँ भी की जाने लगी। मानस का हंस जहाँ आत्म प्रेरित लेखन था, वहीं सूर चरित्र युक्त '' खंजन नयन'' पाठक/प्रकाशक द्वारा अपेक्षित, प्रेरित रूप में रचा गया। नागर जी का कहना था कि सूरदास के प्रति हमारे मन में कोई अकुलाहट प्रारम्भिक दौर में न थी, किन्तु जब राजपाल एण्ड संस के स्वामी विश्वनाथ जी ने इस विषय पर लेखन का आग्रह किया तो हमने सूरदास जी को भी पढ़ने का प्रयास किया। तब पाया कि आपका जीवन भी बड़ा संघर्षमय रहा है। सूर चरित्र के प्रति भी समाज में बहुत सारी भ्रांतियाँ व्याप्त हैं। जिन्होंने नागर को भी बड़ा उद्वेलित किया। समाज में सूर के प्रति जो भ्रमित खाका खींचा गया है उससे आपको चिढ़ सी हुई जिसके परिणाम स्वरूप आप ''खंजन नयन'' (सूरदास चरित्र) उपन्यास लिखने को प्रेरित हुए। लेखन या ''खंजन नयन'' के सृजन की प्रेरणा में कहीं अपरोक्ष रूप से नागर जी की दादी के प्रति गहन मनोभाव भी रहे हैं। क्योंकि जीवन के अंतिम पड़ाव में आपने नेत्रहीनता के दुःखद प्रभाव को भी झेला था। नागर को सूरदास का अध्ययन करते समय काल्पनिक स्वरूप में अपनी मृत दादी के दर्शन होते थे जो कहीं न कहीं खंजन नयन के सृजन संदर्भ के प्रति प्रेरक रहे हैं। दादी की पीड़ा के प्रति मनोभाव आपके भीतर इतने गहरे थे कि खंजन नयन उपन्यास रच जाने के बाद भी आपकी

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
(Saraipali), Mahasamund (C.G.)

व्याकुलता कम न हुई। फिर आपने सम्पूर्ण उपन्यास को ब्रेल लिपि में भी अवतरित किया। आज यह उपन्यास ब्रेल लिपि में पाँच खण्डों में उपलब्ध है। खंजन नयन सृजन संदर्भ से जुड़ी एक विशिष्ट बात यह भी है कि नागर शिव भक्त होने के नाते राम-सीता से तो सहज जुड़ जाते थे, मगर राधा-श्याम के प्रति वह सूक्ष्म आग्रह या रूहानियत ना होने से लेखन के दौरान बेचैन भी हो जाया करते थे। फिर राम-श्याम को एक ही स्वरूप में स्वीकार आगे बढ़ते थे, मगर सीता-राधा न हो पाती तो गाड़ी पुनः अटक जाती। तब नगर ने गोपीनाथ कविराज की पुस्तक ''श्री कृष्ण प्रसंग'' पढ़ी। जहाँ पाया कि राधा का परकाया-स्वकाया के भेद से परे स्वीकारा जाता है तब उन्हें राधा के स्वरूप को समझने में सहजता हुई व सूरदास के ईष्ट राधा कृष्ण पर कलम चलाने में सहूलियत हो गई। फिर खंजन नयन निर्बाध गति से अपने लक्ष्य को प्राप्त हुआ। नागर ने इस कृति के माध्यम से सूरदास के जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया है। आपने सूरदास के व्यक्तित्व को तीन स्तरों पर प्रस्तुत किया है- तल, अतल, सुतल। व्यक्तित्व के भीतर अनेक व्यक्तित्व होते हैं। नागर ने भी महाकवि को सूरज, सूरस्वामी, सूरश्याम, सूरदास अनेक रूप दिए हैं। और अंत में जहाँ ये तीनों रूप समरस होते हैं वहाँ सूरदास राधामय हो जाते हैं, ऐसा आपने अपनी लेखनी द्वारा दर्शाया है। डेढ़ वर्ष की साधना के पश्चात् नागर जी ने महाकवि की निर्वाण स्थली परासौली में बैठकर यह उपन्यास पूरा किया था। साहित्य के प्रति निष्ठा, श्रद्धा और सूर के प्रति समर्पण इस कृति द्वारा पाठक को प्राप्त होता है। यहाँ तक कि आपने अपनी इस लेखनी को ब्रज भाषा में ही प्रस्तुत किया है।

अमृतलाल नागर के साहित्य का अध्ययन करते हुए मैंने महसूस किया कि वे जो कुछ भी लिखते थे उसके पाठकों को दृष्टिगत रखते हुए ही लिखते थे। वे अपनी कृति के पात्रों में डूब जाते थे, उनका स्वयं का व्यक्तित्व वहाँ नगण्य हो जाता था। बाल साहित्य लेखन के समय वे अपने पात्र बालक के स्तर पर आकर अपनी कृति को आकार देते थे। वैसे उन्होंने अपनी प्रत्येक कृति में इसका ध्यान रखा है कि उक्त विषय पर जानकारी प्राप्त करने हेतु बालक भी पढ़े तो उसे आसानी से समझ सके। यही कारण है कि आपकी अनेक रचनाएँ विद्यालयों से महाविद्यालयों के शैक्षिक पाठ्यक्रम का हिस्सा बन सकी है। आपका एक उपन्यास है बूंद और समुद्र जिसमें आपके सामाजिक पात्रों ने समस्त सामाजिक, सांस्कृतिक स्थितियों, सामाजिक जटिलताओं को हूबहू उकेरा है, जिससे बालक, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्ध सभी को अपने अनुकूल अपेक्षित सामग्री प्राप्त हो ही जाती है।

इसी तरह आपकी एक कहानी है ''लंगूर का बच्चा'' जिसमें आपने बिल्ली, कुत्ते, बन्दर की भूमिकाएँ रखते हुए सामाजिक भ्रष्टाचार पर करारा प्रहार किया है। आपने इस कृति में खूबसूरत व मनोरंजक दृश्य उकेरे हैं कि बालक तो बालक हर उम्र के व्यक्ति बालक बन इस कथा का आनंद उठाते हैं व इसके मर्म को आत्मसात करते हैं।

आपकी एक रचना है ''सुहाग के नुपूर'' जो कि रेडियो नाटक के रूप में अनेकों आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित हुआ इसमें प्रेम, आसक्ति, प्रेम की मर्मांतक पीड़ा, कुल मर्यादा, सामाजिक परम्परा एवं सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाया है। पुरुष प्रधान समाज पर करारा वार है- पुरुष जाति के स्वार्थ और दंभ भरी मूर्खता से ही सारे पाप का उदय होता है उसके कारण ही उसका अर्धांग नारी जाति पीड़ित है। वहीं अंत में नारी जाति व्यक्तिगत तौर पर यह महसूस करती है कि सारे फसाद की जड़ में मैं ही हूँ। इसमें पश्चाताप, शांति की तलाश, सामाजिक मर्यादित जीवन की प्रेरणा को भी बड़ी सहजता से दर्शाया है। इसकी अपार सफलता से आपने इसे उपन्यास रूप में रचा। सन् 1994 में मिराण्डा हाउस दिल्ली विश्वविद्यालय की हिन्दी नाट्य समिति के वार्षिकोत्सव पर जब एक पूर्णकालिक की नाट्य प्रस्तुति का प्रश्न आया तो ''सुहाग के नुपूर'' उपन्यास का चुनाव हुआ। कारण कि यह सामाजिक संदेश की सशक्त प्रस्तुति है। हालांकि विद्यालय की सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए इसके नाट्य रूपान्तरण की जिम्मेदारी डॉ. शैल कुमारी को सौंपी गई। फिर बालकों द्वारा बालकों, शिक्षकों, अभिभावकों के समक्ष इसकी शानदार प्रस्तुति दी गई। जो कि सदैव के लिए इस शैक्षिक मंच की यादगार कृति बन गई।

सच है अमृतलाल नागर का सृजन जितना पढ़ा जाए कम है। जितना समझा जाए काफी है। आपने अपने बाल साहित्य सृजन में इस बात पर जोर दिया कि हमारे बालकों को सामाजिक सरोकारों, परम्पराओं, संस्कारों का बोध होता रहे। क्योंकि उन दिनों भी दादी, नानी के पास बैठकर उन्हें सुनने की परम्पराओं का लोप हो रहा था। पूर्व में

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
Bagallor), Mahasamund (C.G.

बालकों को इनसे काफी कुछ ज्ञान/शिक्षा प्राप्त हो जाया करती थी। 70–80 के दशक में यह स्थिति पनपती जा रही थी। अतः पुस्तकीय अध्ययन के माध्यम से ही मात्र नवीन पीढ़ी को सजग करना आप जरूरी समझते थे। सच ही कहते थे आप आज देखिए ना इक्कीसवीं सदी के इस युग में जो दादी–नानी के पौध परिपक्व हो रही है वह स्वयं भी श्रुति व वाचक परम्पराओं में पलकर तैयार नहीं हुई है और बालकों की पौध पुस्तकों से भी दूर जा रही है। सामाजिक, ऐतिहासिक परम्पराओं के बोध की स्थिति विकट से विकटतम की ओर कदम बढ़ाती प्रतीत हो रही है। नवीन तकनीकी युग में इनके प्रस्तुतिकरण के अपने अलग नियम है, जो पुरातन से स्वाभाविक रूप में ही पृथक हो जाते हैं। इस तरह मैंने पाया कि आपका सृजन सदैव विशिष्ट संदर्भ लिए अनूठा सा ही बन रहा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. प्रतिनिधि कहानियाँ, (अमृतलाल नागर) किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
2. सुहाग के नुपूर (अमृतलाल नागर), राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. मानस का हँस (अमृतलाल नागर), राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. खंजर नयन (अमृतलाल नागर), राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. महाभारत (अमृतलाल नागर) राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. इण्टरनेट पर उपलब्ध
7. सृजन यात्रा के प्रेरक प्रसंग और पड़ाव सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय को दिया साक्षात्कार। अभिरुचि अगस्त नवम्बर 1981

PRINCIPAL
Ramchandi College Saraipali
Mahasamund (C.G